सादर प्रकाशनार्थ,

एक दिवसीय मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण सम्पन्न

गेवरा–दीपका:23.09.2016–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्वाधान में केन्द्रीय उत्खनन प्रशिक्षण संस्थान, दक्षिण पूर्वी कोयला प्रक्षेत्र गेवरा में एक दिवसीय मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए भ्राता ए.आर.रहमान वरिष्ठ प्रब्रधक सी.ई.टी.आई गेवरा ने कहा कि अपने आज के परिवेश में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता हरेक को है। कार्य स्थल पर हरेक को अपनी जिम्मदारी से कार्य करते हुए अपने सहयोगी साथियों से सामन्जस्य बनाकर रहना चाहिए। भ्राता अभिजीत चटर्जी डिप्टी मैनेजर लैन्को ने कहा कि धन से सम्पदा व वस्तुओं का संग्रह तो किया जा सकता है लेकिन उससे आंतरिक सुख की अनुभूति करना, ये आपकी मनः स्थिति पर निर्भर करता है। धन से मकान तो खरीदा जा सकता है लेकिन घर–परिवार का वातावरण, आपके मधुर संबंधों और व्यवहार पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी तुलसी बहन ने कहा हम सभी परमात्म बगिया के चैतन्य फूल और कलियां हैं और परमात्मा हमारे माता पिता हैं। इसलिये वह भी हम सभी को सदा खिला हुआ और हंसता–खेलता–प्रफुल्लित देखना चाहते हैं। आपने कहा कि ईश्वर हमें वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है। लेकिन ईश्वर वह देता है जो आपके लिये अच्छा होता है। अपनी दिनचर्या का प्रबंधन करना सीखें और मेडिटेशन के लिये भी समय निकालें तो आपका जीवन खुशहाल बन जायेगा। बहन श्रृति बुद्धिया डायटिशियन अक्षय हास्पिटल कोरबा ने कहा कि व्यर्थ विचारों के बहाव से स्वयं को बचाना चाहिए। अंर्तमन आपका अधिक शक्तिशाली है, इसलिये जो मूल्य आप जीवन में अपनाना चाहते हैं, उनका बार–बार चिन्तन करें और कार्य व्यवहार में लायें। आपने कहा कि बाहरी परिस्थितियां तो आपके नियंत्रण में नहीं, लेकिन आप अपनी आंतरिक शक्तियों को ध्यान–योग और संयम के माध्यम से सशक्त कर सकते हैं। भ्राता प्रकाश गवेल प्रशिक्षक सी.ई.टी.आई ने स्व–प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तनाव तथा कोध ये ऐसे दानव हैं, जो कि अनेकानेक बीमारियों के कारण बनते हैं और हर पहलू में ये हानिकारक हैं। आपने कहा कि विज्ञान की प्रगति में बाहरी जगत में संसाधन तो बहुत मिल गये हैं। लेकिन इनका उपयोग सकारात्मक दिशा में होना चाहिए। भ्राता ए.पी.पाण्डेय ने कहा मन की सबसे बड़ी शक्ति और सम्पत्ति शांति है, जो कि आपका मिलन शांति के सागर परमात्मा से कराती हैं। इसलिये प्रार्थना व तपस्या के लिये लोग एकान्त में रहने का

प्रयास करते हैं। शांत रहने से बुद्धि की निर्णय और परखने की शक्ति आती है और संस्कारों का भी दिव्यीकरण होता है।

मानवता की सेवा में,
ब्रह्माकुमारी रूकमणी।